Tonnies, Ferdinand

फॅरदिनॉ टॉनीज़

(1855-1936)

जर्मन समाजशास्त्री फॅरदिनॉ टॉनीज 'जर्मन समाजशास्त्रीय परिषद्' के संस्थापक पिता माने जाते हैं। वे मुख्यतः समुदाय (गैमिनशाफ्ट) और समाज (गैसेलशाफ्ट) के बीच में किये गये अन्तर तथा 'स्वरूपवादी समाजशास्त्र' संबंधी अपने विचारों के लिये जाने जाते हैं। उनका

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

समुदाय और समाज संबंधी भेद वास्तव में, विभिन्न प्रकार के सम्बंधों पर आधारित है जो लघु स्तरीय और वृहत स्तरीय समाजों की एक अनुमानित विशेषता है। इनके अनुसार, ऐसे समाज जो साझा संस्कृति और जीवन शैली पर आधारित हैं तथा मुख्यतः पारम्परिक बंधनों द्वारा बंधे होते हैं, इन्हें समुदाय (गैमिनशाफ्ट) कहते हैं। गैमिनशाफ्ट में जनसंख्या में अधिकांशतः गतिहीनता के साथ-साथ प्रस्थिति जन्मजात होती है। ऐसे समाजों में आस्थाओं, भावनाओं और सहयोगी सम्बंधों के विकास में परिवार और धार्मिक समूहों (चर्च) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। ऐसे सम्बंधों के दर्शन गाँव और छोटे समुदायों में किये जा सकते हैं। किन्तु जैसे-जैसे इन समाजों में श्रम-विभाजन अधिकाधिक जटिल होता जाता है, ये सम्बंध अनुबंधात्मक और अवैयक्तिक सम्बधों में बदलते जाते हैं और इन्हीं के आधार पर गैशलशाफ्ट सामाजिक सम्बंधों को प्रदर्शित करने वाले विशाल संगठनों (समितियों) और नगरों का विकास होता जाता है। गैशलशाफ्ट (समाज) समितियों और संघों पर आधारित होते हैं जो भिन्नताओं के आधार पर बंधे होते हैं। भिन्नताओं को जटिल श्रम विभाजन और अन्तर्परस्परिकता द्वारा पाटा जाता है। टॉनीज़ ने आधुनिक नगरीय समाज जो गैशलशाफ्टीय सम्बंधों (अलगावपन और निर्वैयक्तिता) पर आधारित होते हैं, में बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिवादिता के प्रभुत्व और निरंतर किन्तु तीव्र गति से कमजोर होती हुई सामुदायिक भावना पर गहरे आंसू बहाये हैं। इसी कारण टॉनीज़ को उपयोगितावाद के कटु आलोचक के साथ-साथ निराशावादी और रूढ़िवादी विचारक माना जाता है। टॉनीज़ का गैमिनशाफ्ट और गैशेलशाफ्ट का भेद दुर्खाइम के यांत्रिक और सावयविक एकजुटता के भेद से मिलता-जुलता है। इसकी लगभग वे ही कमजोरियां हैं जो दुर्खाइम के द्विभाजन में देखने को मिलती हैं।

टॉनीज़ ने **समाजशास्त्र को तीन प्रमुख शाखाओं** में बाँटा है—**शुद्ध या सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और अनुभवपरक**। समुदाय और समाज (गैमिनशाफ्ट और गैशेलशाफ्ट) का अन्तर सैद्धान्तिक समाजशास्त्र के अध्ययन का मुख्य विषय है। ये दोनों मूलभूत अवधारणाएं हैं जो समाज के सामुदायिक से साहचर्यात्मक चरित्र में परिवर्तन में, अनुभवपरक और व्यावहारिक समाजशास्त्र को दिशा निर्देश प्रदान करती हैं। मैक्स वेबर की शब्दावली में यद्यपि ये आदर्श प्ररूप (आइडिअल टाईप्स) हैं, टॉनीज़ ने इन दोनों अवधारणाओं के जोड़ों को जर्मनी के ग्रामीण से औद्योगिक समाज में ऐतिहासिक फेर बदलाव के लिये प्रयोग किया है।

टॉनीज़ दार्शनिक **ए. शोपेनहार** (1788-1860) **और एफ.नीत्से** (1844-1900) के दर्शन से काफी प्रभावित थे। इन्हीं से उन्होंने 'जीवन के प्रति इच्छा' की धारणा को ग्रहण किया और कहा कि सामाजिक सम्बंध मानवीय इच्छा का प्रतिफल (उत्पत्ति) हैं। टॉनीज़ ने **दो प्रकार की इच्छाएं** बताई हैं, प्राकृतिक इच्छा और तार्किक इच्छा। प्राकृतिक इच्छा सहजवृतिमूलक जरूरतों, आदतों, आस्थाओं और प्रवृति की अभिव्यक्ति हैं, तार्किक इच्छा लक्ष्यों हेतु साधनों के चुनाव में साधनात्मक तार्किकता को परिलक्षित करती हैं। जहां प्राकृतिक इच्छा वास्तविक और जैविक होती है, वहां तार्किक इच्छा संकल्पनात्मक और कृत्रिम। इच्छा के ये स्वरूप समुदाय और समिति के बीच अन्तर से मिलते-जुलते हैं क्योंकि सामुदायिक जीवन प्राकृतिक इच्छा की अभिव्यक्ति है और सहचारी जीवन तार्किक इच्छा का प्रतिफल होती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

जेमिन्शाफ़्ट और गेज़ेलसचफ़्ट

Gemeinschaft (जर्मन उच्चारण: [ɡəˈmaɪnʃaft]) और *Gesellschaft* ([generallyz translatedlʃaft]), जिसे आम तौर पर " समुदाय और समाज " के रूप में अनुवादित किया जाता है, वे श्रेणियां हैं जिनका इस्तेमाल जर्मन समाजशास्त्री फर्डिनेंड टॉन्नीज़ द्वारा किया गया था ताकि सामाजिक संबंधों को दो द्वंद्वात्मक समाजशास्त्रीय प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सके जो एक दूसरे को परिभाषित करते हैं। मैक्स वेबर , समाजशास्त्र में एक संस्थापक आंकड़ा है, भी के बीच के रिश्ते के बारे में विस्तार से लिखा है *गेमाइनशाफ्ट* और *गेसेलशाफ्ट*। वेबर ने टॉन्नीज के सीधे जवाब में लिखा। [1]

अंतर्वस्तु

जेमिन्शाफ़्ट - गेज़ेलसचफ़्ट डाइकोटॉमी

वैश्वीकरण

समाजशास्त्र के बाहर

नवीनतम संस्करण

यह भी देखें

नोट

संदर्भ

जेमिन्शाफ़्ट - गेज़ेलसचफ़्ट डाइकोटॉमी

डाइकोटॉमी के अनुसार, सामाजिक संबंधों को एक तरफ वर्गीकृत किया जा सकता है, व्यक्तिगत सामाजिक बातचीत के रूप में , और इस तरह के इंटरैक्शन के आधार पर भूमिकाएं, मूल्य, और विश्वास (*जेमिनशाफ्ट* , जर्मन, आमतौर पर " समुदाय " के रूप में अनुवादित), या पर। अप्रत्यक्ष बातचीत, अवैयक्तिक भूमिकाएं, औपचारिक मूल्य और इस तरह की बातचीत के आधार पर मान्यताओं (*Gesellschaft* , जर्मन, आमतौर पर " समाज " के रूप में अनुवादित) से संबंधित अन्य हाथ। [2] *गेमाइनशाफ्ट-Gesellschaft* विरोधाभास एक विशुद्ध वैचारिक उपकरण के रूप में के बजाय एक के रूप में Tönnies द्वारा प्रस्तावित किया गया आदर्श प्रकार यह द्वारा इस्तेमाल किया गया था रास्ते में मैक्स वेबर एक ऐतिहासिक / सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख तत्वों का उच्चारण करना।

टॉनीज़ एक थॉमस हॉब्स विद्वान थे - उन्होंने हॉब्स के द *एलिमेंट्स ऑफ़ लॉ* [3] और *बेहमॉथ* के मानक आधुनिक संस्करणों का संपादन किया । [4] यह हॉब्स का उनका अध्ययन था जिसने टॉनीज़ को इतिहास के दर्शन और कानून के दर्शन के लिए खुद को समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित किया । और यह तर्क दिया गया है कि उन्होंने दोनों श्रेणियों को "समवर्ती" और "संघ" के हॉब्स की अवधारणाओं से लिया है। [5]

1912 में प्रकाशित दूसरे संस्करण में, उस कार्य के लिए जिसमें टॉनिज़ ने आगे की अवधारणाओं को बढ़ावा दिया, एक अप्रत्याशित लेकिन स्थायी सफलता बन गई [6] जब पहला संस्करण 1887 में उपशीर्षक के साथ प्रकाशित हुआ था "साम्यवाद और समाजवाद पर अनुभवजन्य पैटर्न के रूप में ग्रंथ। संस्कृति का "। [1] सात और जर्मन संस्करणों का अनुसरण किया गया, १९३५ में अंतिम. [it] और यह विचारों के सामान्य भंडार का हिस्सा बन गया जिसके साथ १९३३ के पूर्व जर्मन बुद्धिजीवी काफी परिचित थे। इस पुस्तक ने कॉरपोरेटवादी सोच को पुनर्जीवित किया , जिसमें नव-मध्ययुगीनवाद का उदय , गिल्ड समाजवाद के समर्थन का उदय और समाजशास्त्र के क्षेत्र में बड़े बदलाव शामिल हैं।

Scanned with CamScanner

[9]नब्बे के दशक के उत्तरार्ध और शुरुआती बीसवीं शताब्दी में जॉर्ज सिमेल , एमाइल दुर्खीम और मैक्स वेबर जैसे अत्यधिक प्रभावित सामाजिक सिद्धांतकारों के बीच जेमिनशाफ्ट और गेसेल्सचफ्ट के बीच अंतर चर्चा और बहस का एक बड़ा हिस्सा था। [10]

अवधारणाओं *गेमाइनशाफ्ट* और *गेसेलशाफ्ट* को मैक्स वेबर द्वारा इस्तेमाल किया गया *अर्थव्यवस्था और समाज* , जो पहली बार 1921 में प्रकाशित किया गया था वेबर Tönnies लिए सीधी प्रतिक्रिया में लिखा है, [11] और तर्क दिया कि *गेमाइनशाफ्ट* एक "व्यक्तिपरक महसूस" है कि हो सकता है "में निहित है प्रभावशाली या पारंपरिक "। वेबर के अनुसार, *गेसेल्सचफ्ट*- आधारित रिश्ते "आपसी सहमति से तर्कसंगत समझौते" में निहित हैं, जिसका सबसे अच्छा उदाहरण एक व्यावसायिक अनुबंध है। *Gemeinschaft* और *Gesellschaft* केबीच संबंधों की तरलता और *अनाकारता* पर जोर देने के लिए , वेबर ने जर्मन में *Vergemeinschaftung* की शर्तों को संशोधित किया , और*Vergesellschaftung* , जो जर्मन शब्दों के gerund रूप हैं। [11] के बीच वेबर का भेद *गेमाइनशाफ्ट* और *गेसेलशाफ्ट* निबंध "वर्ग, Stande, पार्टियां", हाइलाइट किया गया है [12] जो वेबर के लिए आधार है स्तरीकरण के तीन घटक सिद्धांत।

की अपनी अवधारणा प्रतिपादित करने के बाद *गेमाइनशाफ्ट* - *Gesellschaft* विरोधाभास, Tönnies साथ एक तेज विवादात्मक में खींचा गया था एमिल दुर्खीम। 1889 में Tönnies की पुस्तक की समीक्षा में, Durkheim ने एक जैविक समुदाय के रूप में *Gemeinschaft* की व्याख्या की , और *Gesellschaft* ने एक यांत्रिक एक के रूप में, दूसरे प्रकार के सामाजिक उत्पाद कृत्रिम विचार करने के लिए Tönnies को फिर से पछाड़ दिया, और एक प्रकार से दूसरे प्रकार के संक्रमण को नहीं देखा। टॉनीज़ उनके विचारों की ऐसी व्याख्या से सहमत नहीं थे, और बदले में, जब दुर्खीम की *द डिवीजन ऑफ़ लेबर ऑफ सोसाइटी* (1896) की समीक्षा की, तो लिखा कि दुर्खीम का पूरा समाजशास्त्र स्पेन्सर का एक संशोधन और संस्करण था, जो कि अन्यायपूर्ण भी था।

वैश्वीकरण

एरिक हॉब्सबॉम ने तर्क दिया कि, जैसा कि वैश्वीकरण पूरे ग्रह को एक तेजी से दूरस्थ प्रकार के *Gesellschaft में बदल देता है* , इसलिए सामूहिक सामूहिक राजनीति भी कृत्रिम रूप से समूह बंधन और पहचान को पुनर्जीवित करने के लिए *Gemeinschaft* के गुणों का एक काल्पनिक रीमेक बनाना चाहती है। [13]

फ्रेड्रिक जेम्सन ने *जेमिशचैफ्ट* के शेष एन्क्लेव के लिए *गेसशाफ्ट* द्वारा निर्मित उन उभयलिंगी ईर्ष्याओं पर प्रकाश डाला , जब वे अनिवार्य रूप से अपने अस्तित्व को *खतरे में* डालते थे। [14]

समाजशास्त्र के बाहर

में व्यापार के उपयोग, *Gesellschaft* "के लिए जर्मन शब्द है कंपनी के रूप में," *Aktiengesellschaft* या *Haftung beschränkter Gesellschaft mit (GmbH)*। "Gemeinschaft" का उपयोग उन समूहों की पहचान करने के लिए किया जाता है जिनके पास एक अधिक "पारस्परिक" तत्व है जो वफादार वफादारी का दावा करता है। एक महत्वपूर्ण उपयोग यूरोपीय आर्थिक समुदाय के लिए जर्मन नाम में है , *Europäische Wirtschaftsgemeinschaft* ।

"पारस्परिक बीमा कंपनी" के लिए जर्मन वाक्यांश में "पारस्परिक" और "कंपनी" दोनों शब्द शामिल हैं। 1980 में, फ्रैंकेनमुथ म्युचुअल इंश्योरेंस कंपनी, जिसका मुख्यालय जर्मन-अमेरिकी शहर फ्रैंकेनमुथ, मिशिगन में है, ने अपनी कंपनी के नाम के अनुवाद में एक पारंपरिक जर्मन फ्रैक्टुर फॉन्ट में मैचबुक, विशेषता जैसे विभिन्न प्रचारक आइटम जारी किए। गेसेलशाफ्ट। "

Scanned with CamScanner

प्रारम्भिक सामाजिक जीवन के स्वरूप हैं मानव-जाति-विज्ञान द्वारा किए गए हाल ही के अध्ययनों से आदिम साम्यवाद का अस्तित्व प्रमाणित हो गया और टॉनीज़ मानव-इतिहास को मूल सरल साम्यवाद से व्यक्तिवाद के विभिन्न स्तरों से गुजरता हुआ अन्ततः राज्य और अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद तक पहुँचने वाली एक गति के रूप में विचारने लगे। इन सब विचारों को उन्होंने, इस समय प्रसिद्ध अपनी पुस्तक ***Gemeinschaft and Gesellschaft*** में प्रस्तुत किया जोकि 1887 में प्रकाशित हुई।

सन् 1881 में टॉनीज़ की नियुक्ति कील विश्वविद्यालय में प्रवक्ता पद पर हो गई जहाँ कि वे सन् 1933 तक कार्य करते रहे।

स्वभाव से रूढ़िवादी होते हुए भी टॉनीज़ को अपने समय के प्रगतिवादी आन्दोलनों के प्रति समस्त सहानुभूति थी। 'उपभोक्ता सहकारिता आन्दोलन' तथा 'श्रमिक संघ आन्दोलन'—इन दो संगठित श्रमिक आन्दोलनों के प्रति उन्हें विशेष सहानुभूति रही। आपने इन आन्दोलनों में उस अवस्था की शुरुआत को देखा जिसमें कि एक बेहतर समाज का विकास हो सकता है।

टॉनीज़ 'जर्मन समाजशास्त्रीय परिषद्' के संस्थापकों में से एक थे एवं बहुत वर्षों तक इसके अध्यक्ष रहे। आप American Sociological Society के भी अवैतनिक सम्मानित सदस्य रहे। इस रूप में उनका सम्पर्क अपने समय के विभिन्न प्रकार के विद्वानों से रहा। सन् 1936 में प्रायः 81 वर्ष की आयु में आपकी मृत्यु हो गई। आपकी प्रशंसा करते हुए रुडॉल्फ हेबर्ली ने लिखा है कि **"टॉनीज़ हमारी पीढ़ी के उन आखिरी विचारकों में से एक थे जिनका कि मानव-विज्ञानों तथा सांस्कृतिक व सामाजिक विज्ञानों में एक वास्तविक सर्वव्यापी पाण्डित्य था।"**

टॉनीज़ ने समाजशास्त्र, सामाजिक दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीतिशास्त्र से सम्बन्धित विषयों पर अपने असंख्य लेख व कृतियों का सृजन किया है। फिर भी आपकी ख्याति मुख्यतः आपकी प्रसिद्ध पुस्तक ***Gemeischaft and Gesellschaft*** **(Community and Society)** के ही कारण है। इस पुस्तक ने जर्मनी की सामूहिक चेतना को अत्यधिक प्रभावित किया। आपकी अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियाँ 'नैतिकता व जनरीति' *(Die Sitte 1990)* एवं 'जनमत' *(Kritik der offentlichen Meinung,* 1922) विषयों से सम्बन्धित हैं। आइए, अब हम टॉनीज़ के प्रमुख विचारों का विश्लेषण करें।

समुदाय और समाज
(Community and Society)

टॉनीज़ के अनुसार समाज या सामाजिक सम्बन्ध के दो आधारभूत स्वरूप

Scanned with CamScanner

हैं—'समुदाय' *(Gemeischaft)* और 'समाज' *(Gesellschaft)*। समुदाय जैसाकि सोरोकिन ने समझाया है, एक 'सावयवी इच्छा' रखने वाले व्यक्तियों का एक संघ है जिसका संगठन या एकात्मता निश्चय ही सगोत्रता की प्राकृतिक शाक्ति के कारण पनपती है। यह प्रकृति की एक उपज है अथवा एक प्रकार का प्राकृतिक सावयव है। उसमें कोई व्यक्तिगत इच्छा नहीं होती। व्यक्ति तो एक आम निकाय के सदस्य मात्र होते हैं जिसमें कि एक स्वाभाविक या प्राकृतिक एकात्मता, सुसंगत अन्तःसम्बन्ध तथा इच्छा की समरूपता होती है क्योंकि व्यक्ति की इच्छा को सामूहिक इच्छा के द्वारा दबा दिया जाता है। इस प्रकार एक समुदाय में 'सावयवी संगठन या एकात्मता' देखने को मिलती है। स्पष्ट है कि **टॉनीज़** का 'समुदाय' बाद को **दुर्खीम** द्वारा प्रतिपादित 'यान्त्रिक एकात्मकता वाला एक समूह है।'

इसके विपरीत 'समाज' जैसाकि **सोरोकिन** ने आगे लिखा है, व्यक्तियों की एक समग्रता है जोकि अपनी-अपनी वैयक्तिक इच्छानुसार अपने निजी उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अन्तःक्रिया करते हैं यह एक प्राकृतिक या स्वाभाविक उपज नहीं है और किसी भी रूप में एक प्राकृतिक सावयव भी नहीं है। वास्तव में यह एक कृत्रिम यान्त्रिकता है। इसी प्रकार के स्वरूप को **दुर्खीम** ने 'सावयवी संगठन या एकात्मता' पर आधारित एक समूह माना है। **सोरोकिन** का विचार है कि सम्भवतः **दुर्खीम** ने जानबूझकर अपने सामाजिक प्रारूपों का नाम **टॉनीज़** द्वारा दिए गए नामों से उलटा रखा।

सोरोकिन ने **टॉनीज़** द्वारा प्रतिपादित 'समुदाय' और 'समाज' की अवधारणाओं में पाए जाने वाले अन्तरों को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया है—

समुदाय	समाज
1. सामान्य इच्छा।	वैयक्तिक इच्छा।
2. सदस्यों का कोई व्यक्तिगत महत्त्व नहीं।	सदस्यों का व्यक्तिगत महत्त्व।
3. सामुदायिक स्वार्थों का प्रभुत्व।	वैयक्तिक स्वार्थों का प्रभुत्व।
4. विश्वास।	सिद्धान्त (वाद)।
5. धर्म।	जनमत।
6. रूढ़ियाँ एवं प्रथाएँ।	फैशन, धुन, ढंग।
7. सावयवी, प्राकृतिक एकात्मकता।	यन्त्रवत्, अनुबन्धात्मक, एकात्मता, वाणिज्य और विनिमय।
8. सामान्य या सामुदायिक सम्पत्ति।	निजी सम्पत्ति।

स्पष्ट है, जैसाकि **हेवर्ली** ने लिखा है, सामाजिक समूहों की आधारभूत अवधारणाओं के रूप में 'समुदाय' और 'समाज' सावयवी तथा यान्त्रिक सामाजिक तत्त्वों में पाए जाने वाले अन्तरों को स्पष्ट करते हैं अथवा उन भेदों को बताते हैं जोकि सहानुभूति की भावनाओं से प्रेरित स्वाभाविक रूप में उत्पन्न सम्बन्धों एवं सचेत रूप में व एक निश्चित उद्देश्य

Scanned with CamScanner

की पूर्ति हेतु स्थापित सम्बन्धों के बीच होते हैं। जब हम समाज या समुदाय के सन्दर्भ में इन अवधारणाओं का प्रयोग करते हैं, तो यह उल्लेखनीय है कि टॉनीज़ का तात्पर्य उन उद्देश्यों की व्याख्या करना नहीं है जिनके कारण व्यक्ति समुदाय या समाज में प्रवेश करते हैं, अपितु उन कारणों को स्पष्ट करना है जिनके फलस्वरूप समुदाय या समाज का अस्तित्व बना रहता है। टॉनीज़ के अनुसार समुदाय का अस्तित्व व उत्पत्ति सामुदायिक या सामान्य इच्छा, जिसे कि आपने Wesenwille की संज्ञा दी है, के कारण होती है जबकि समाज का अस्तित्व व उत्पत्ति वैयक्तिक इच्छा अथवा टॉनीज़ की शब्दावली में Kurwille के परिणामस्वरूप होती है। इसीलिए टॉनीज़ ने लिखा है कि ये दोनों अवधारणाएँ एक-दूसरे से सम्बद्ध रहने की मानवीय प्रवृत्तियों के आदर्श गुणों को दर्शाती हैं।

'समुदाय' और 'समाज' के आधार के रूप में उपरोक्त इच्छाओं की प्रकृति को भी टॉनीज़ ने स्पष्ट किया है। आपका निश्चित मत है कि समस्त सामाजिक सम्बन्ध मानव-इच्छा की ही उपज होते हैं। इन इच्छाओं के दो मुख्य स्वरूप हो सकते हैं—प्रथम, तो एक समूह या सम्बन्ध को इस इच्छा से स्थापित किया जा सकता है कि उसके द्वारा एक निश्चित लक्ष्य की पूर्ति करनी है जैसे एक व्यापारिक समूह या सम्बन्ध; दूसरे, समूह या सम्बन्धों की इच्छा व्यक्ति इसलिए भी करता है कि उसे अपने सहयोगियों से आन्तरिक सहानुभूति है और वह यह अनुभव करता है कि वह सम्बन्ध अपने-आपमें मूल्यवान है, जैसे दोस्ती। टॉनीज़ ने प्रथम प्रकार की इच्छा को Kurwille एवं द्वितीय प्रकार को Wesenwille की संज्ञा दी है। Kurwille वह तर्कसंगत इच्छा है जोकि लक्ष्य तथा साधन में भेद करती है। इसके विपरीत, Wesenwille से तात्पर्य इच्छा करने की किसी भी ऐसी प्रक्रिया से है जोकि एक व्यक्ति के स्वभाव और चरित्र से उत्पन्न होती है, चाहे उसका मूलस्रोत अभिरुचि में हो या आदत में अथवा दृढ़ विश्वास में। इसीलिए 'समुदाय' की विशिष्टता आधारभूत जीवनशक्तियों या आवेगों द्वारा उत्पन्न क्रियाएँ हैं, जबकि 'समाज' की विलक्षणता विचार-विमर्श व सचेत पसन्द पर आधारित क्रियाएँ हैं।

टॉनीज़ के 'समुदाय' और 'समाज' के बीच के अन्तर को और भी स्पष्ट करते हुए बोगार्डस ने आगे और लिखा है कि समुदाय प्राकृतिक या स्वाभाविक प्रक्रियाओं पर बल देता है, जबकि समाज कृत्रिम, सहेतुक प्रक्रियाओं पर। समुदाय प्राथमिक समूहीकरण का एक स्वरूप है जबकि समाज द्वितीयक समूहीकरण का।

सोरोकिन ने टॉनीज़ के विचारों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से 'समुदाय' का उद्भव 'समाज' से पहले हुआ है क्योंकि आदिकालीन समूह, परिवार और जनजातियाँ 'समुदाय' के ही ठोस उदाहरण हैं। पर कालान्तर में 'समुदाय' का विघटन प्रारम्भ हो गया और उसके स्थान पर 'समाज' प्रकट हुआ। इस प्रकार 'समाज' की प्रगति 'समुदाय' की कीमत पर होती जा रही है। फलतः किसी समुदाय के साथ मनुष्य की घनिष्ठता घटती जा रही है और उसके स्थान पर अस्थायी व अनुबन्धात्मक रूप में वह अधिकाधिक संख्या में वृहत्तर समूहों का सदस्य बनता जा रहा है। इस प्रकार

Scanned with CamScanner

इतिहास समुदाय से समाज की ओर, 'जनता की संस्कृति से राज्य की सभ्यता' की ओर अग्रसर होता जाता है। **टॉनीज़** का विश्वास है कि इस प्रकिया को पलटा नहीं जा सकता।

टॉनीज़ द्वारा प्रस्तुत 'समुदाय' तथा 'समाज' की अवधारणाओं के विषय में आलोचकों द्वारा यह आपत्ति उठाई जाती है कि ये अवधारणाएँ एक ओर तो परस्पर विरोधी अवधारणात्मक श्रेणियों का प्रतिनिधित्व करती हैं और दूसरी और ऐतिहासिक विकास की अवस्थाओं को दर्शाती हैं एवं वे केवल वर्गीकरण करने वाली अवधारणाएँ हैं। लेकिन **हेबर्ली** का मत है कि **टॉनीज़** ने 'समुदाय' और 'समाज' को वर्गीकरण करने वाली अवधारणाओं के रूप में निश्चय ही प्रस्तुत नहीं किया है। यद्यपि उन्होंने कभी-कभी परिवार या गाँव को 'समुदाय' और नगर या राज्य को 'समाज' की संज्ञा दी है, फिर भी वे केवल एक रूप-तालिका (paradigm) ही हैं। **टॉनीज़** के लिए 'समुदाय' और 'समाज' आदर्श प्रारूप की विशुद्ध अवधारणाएँ हैं जिनका कि अस्तित्व अनुभवसिद्ध दुनिया में है ही नहीं। इसलिए उनका उपयोग वर्गीकरण करने वाली अवधारणाओं के रूप में किया नहीं जा सकता। वस्तुतः उन्हें लक्षण या विशेषताएँ ही मानना चाहिए जोकि अनुभवसिद्ध सामाजिक तत्त्वों में विभिन्न अनुपातों में पाई जाती हैं। यदि हम परिवार को 'समुदाय' कहकर परिभाषित करें, तो निश्चय ही हमारा समाजशास्त्रीय बोध या ज्ञान का रास्ता बन्द हो जाएगा। पर यदि समाजशास्त्री अपने अध्ययनों में यह खोजने का प्रयास करें कि किस प्रकार के परिवार में 'समुदाय' के लक्षण या विशेषताएँ अधिक हैं और किस प्रकार के परिवार में 'समाज' के लक्षण अधिक अनुपात में हैं, तो निश्चय ही तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन करने में सहायता मिलेगी। **टॉनीज़** द्वारा प्रस्तुत इन अवधारणाओं का महत्त्व भी शायद यही है।

टॉनीज़ का समाजशास्त्र
(Sociology of Tonnies)

फर्डिनेंड टॉनीज़ ने अपनी प्रख्यात पुस्तक ***Gemeinschaft and Gesellschaft*** में समाजशास्त्र की अवधारणा को प्रस्तुत किया जोकि वस्तुतः बाद को **जार्ज सिम्मेल** द्वारा प्रतिपादित समाजशास्त्र के ही समरूप थी एक मूल्यवान कृति में **टॉनीज़** ने न केवल 'विशुद्ध' या 'स्वरूपात्मक समाजशास्त्र' की रूपरेखा मात्र को प्रस्तुत किया, अपितु सामाजिक सम्बन्धों के आधारभूत स्वरूपों का तथ्यपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए इस प्रकार के समाजशास्त्र की वास्तविक प्रकृति को भी दर्शाया। **सिम्मेल** के विचारों का सारतत्त्व यह रहा है कि यथार्थ अर्थ में विशुद्ध, समाजशास्त्र तथा अन्य सामाजिक विज्ञानों में यह अन्तर है कि अन्य सामाजिक विज्ञानों का अध्ययन-विषय मानव के सामाजिक जीवन के विशिष्ट पक्ष हैं, जबकि समाजशास्त्र का अध्ययन-विषय सामाजिक अन्तःक्रियाओं या सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप हैं जोकि समाज का वास्तविक सारतत्त्व है। ठीक इसी प्रकार **टॉनीज़** ने भी विशुद्ध समाजशास्त्र को सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों का ही विज्ञान

Scanned with CamScanner

माना है। आपने, जैसाकि पहले ही बताया गया है, समाज या सामाजिक सम्बन्धों के दो स्वरूपों–'समुदाय' और 'समाज'–का उल्लेख किया है। आपके अनुसार समुदाय में सामाजिक सम्बन्धों का स्वरूप 'सावयवी' होता है, जबकि समाज में यह स्वरूप 'यन्त्रवत्' होता है। सावयवी सम्बन्ध सहानुभूति की भावनाओं से प्रेरित स्वाभाविक रूप में उत्पन्न सम्बन्ध होते हैं, जबकि यन्त्रवत् सम्बन्ध सचेत रूप में व एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्थापित अनुबन्धात्मक सम्बन्ध होते हैं। समाजशास्त्र, टॉनीज़ के मतानुसार, सामाजिक सम्बन्धों के इन्हीं प्रारूपों का अध्ययन है और इसी अर्थ में यह सामाजिक मनोविज्ञान से भिन्न है क्योंकि समाजशास्त्र समाज के सदस्यों के बीच पाए जाने वाले सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों, जोकि कुछ निश्चित प्रारूपों के रूप में अभिव्यक्त होते हैं, का अध्ययन करता है, न कि समाज में सम्बन्धित व्यक्तियों की विशिष्ट मानसिक मनोवृत्तियों का।

प्रो. टॉनीज़ ने अपनी उपरोक्त कृति ***Gemeinschaft and Gesellschft*** में तीन प्रकार के समाजशास्त्र का उल्लेख किया है–**विशुद्ध, व्यावहारिक** तथा **प्रयोगसिद्ध**। आपने एक सामान्य समाजशास्त्र की भी कल्पना की जिसका कि अध्ययन-क्षेत्र अधिक विस्तृत होगा और जोकि समस्त समाज के सामाजिक पक्षों का अध्ययन करेगा।

विशुद्ध समाजशास्त्र जैसाकि पहले ही लिखा जा चुका है, सामाजिक सम्बन्धों के उन स्वरूपों का मुख्यतः अध्ययन करता है जोकि समाज या सामाजिक सम्बन्धों की दो अवधारणाओं–'समुदाय' और 'समाज'–में अभिव्यक्त होते हैं। इस रूप में विशुद्ध समाजशास्त्र स्वाभाविक मानव-सम्बन्धों, लक्ष्यों तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन है। **व्यावहारिक समाजशास्त्र** विशुद्ध समाजशास्त्र की अवधारणाओं का ऐतिहासिक सामाजिक उद्विकास के क्षेत्र के अन्तर्गत उपयोग है। विशुद्ध समाजशास्त्र सामाजिक प्रक्रियाओं का एक प्रतिनिधिक अंश प्रस्तुत करता है, जबकि व्यावहारिक समाजशास्त्र क्रियारत समाज का एक अनुलम्ब चित्र पेश करता है। व्यावहारिक समाजशास्त्र में 'समुदाय' से 'समाज' की ओर मनुष्य की गतिशीलता को दर्शाया जाता है। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि समाजशास्त्र का विशुद्ध समाजशास्त्र व व्यावहारिक समाजशास्त्र में इसी प्रकार का वर्गीकरण या विभाजन टॉनीज़ से भी पहले **लेस्टर एफ. वार्ड** ने प्रस्तुत किया था।

प्रयोगसिद्ध समाजशास्त्र सामाजिक जीवन से सम्बन्धित तथ्यों का प्रत्यक्ष व वस्तुनिष्ठ पद्धतियों द्वारा संकलन है। इन तथ्यों के साथ विशुद्ध विज्ञान की अवधारणाओं का उपयोग अत्यावश्यक है, यदि हमें सामाजिक उद्विकास के सम्बन्ध में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना है।

Scanned with CamScanner